ॐ

श्री तीर्थचक्र विधान

रचयिता

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजयभैया, मुरैना

कृति	:	श्री तीर्थचक्र विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
प्रसंग	:	22वाँ चातुर्मास 2020 शिवपुरी (म. प्र.)
लागत मूल्य	:	20/-
प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान	:	श्री जैनोदय विद्या समूह संपर्क-9425128817
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व. सवाई सिंघई श्री नेमीचंदजी जैन

सतनवाड़ा वालों की स्मृति में

श्रीमती राधाबाई जैन

संजय-श्रीमती ममता, शैलेन्द्र-श्रीमती संध्या

ऐश्वर्या, आशी, जतिन जैन एवं सवाई सिंघई

जड़ीबूटी परिवार शिवपुरी (म.प्र.)

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस समय पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है वहीं शिवपुरी में प्रवास के दौरान प्रभु भक्ति करते हुए आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर संयमस्वर्ण महोत्सव मण्डित संतशिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्रीविद्यासागरजीमहाराज के परम शिष्य अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजीमहाराज ने प्रस्तुत कृति **'श्री तीर्थचक्र विधान'** की रचना करके महान् उपकार किया है। इस विधान के माध्यम से हम सभी भारतवर्ष के सभी निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रों की वंदना एक साथ करके माहन् अतिशय पुण्य का अर्जन कर सकते हैं। प्रस्तुत कृति सभी भव्यजीवों के धर्मध्यान करने में सहायक बनेगी। क्षेत्रों के नाम होने के कारण कहीं-कहीं छन्दों में स्खलन वा कठिनाई महसूस हो सकती है। कृपया सँभाल के पढ़ें। यदि किसी श्रावक या भक्त के ध्यान में कोई तीर्थक्षेत्र का नाम जो इसमें आने से छूट गया हो तो हम तक सूचना देने की कृपा करें ताकि अगले प्रकाशन में उसे जोड़ सकें।

राजेश बोटा, माणिक, अर्चित-श्रीमती सोनम, रूपेश, सौरभ, पुनीत, पीयूष, रोहित, कलश और पाठशाला की बहनें प्राची, चाहना, ऐशु, आशी, स्वाति, खुशी, आदि जिन लोगों ने इस कृति के संयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग किया उन सभी को बहुत-बहुत साधुवाद एवं मुनिश्री का आशीर्वाद...। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा. ब्र. संजय, मुरैना

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
1. मंगल भावना	05
2. मंगलाचरण	06
3. श्री तीर्थचक्र समुच्चय पूजन	07
4. प्रथम अर्घ्यावली (निर्वाण-सिद्धक्षेत्र)	09
5. द्वितीय अर्घ्यावली (जन्मकल्याणक क्षेत्र)	13
6. तृतीय अर्घ्यावली-	
I. अतिशय क्षेत्र-मध्यप्रदेश	15
II. अतिशय क्षेत्र-उत्तरप्रदेश	23
III. अतिशय क्षेत्र-राजस्थान	26
IV. अतिशय क्षेत्र-बिहार	30
V. अतिशय क्षेत्र-झारखण्ड	30
VI. अतिशय क्षेत्र-पश्चिम बंगाल	30
VII. अतिशय क्षेत्र-असम	31
VIII. अतिशय क्षेत्र-हरियाणा	31
IX. अतिशय क्षेत्र-गुजरात	31
X. अतिशय क्षेत्र-महाराष्ट्र	33
XI. अतिशय क्षेत्र-कर्णाटक	35
XII. अतिशय क्षेत्र-तमिलनाडु	37
XIII. अतिशय क्षेत्र-आंध्रप्रदेश	39
7. चतुर्थ अर्घ्यावली (तीर्थक्षेत्र)	39
8. समुच्चय जयमाला	42
9. आरती	44

===

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥ 1॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥ 2॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥ 3॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥ 4॥ तेरा...

===

श्री तीर्थक्षेत्र विधान

मंगलाचरण

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥

(जोगीरासा)

देव शास्त्र गुरुओं का प्यारा, भारत देश हमारा।
जहाँ अनन्तानन्त साधकों, ने आतम शृंगारा॥
पुण्यभूमि ये तपोभूमि ये, तीर्थभूमि है न्यारी।
हमको प्राणों से प्यारी है, भारत भूमि हमारी॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 4

होते यहाँ पंचकल्याणक, सम्यक् वैभव धारी।
जीवमात्र के हितकारी हों, अतिशय मंगलकारी॥
तीर्थंकर प्रभु के विहार में, चरण कमल के नीचे।
सुर दो सौ पच्चीस कमल रच, बीच चलें प्रभु नीके॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 4

नदी-तटों से वन-गिरियों से, अपना भारत सोहे।
सिद्धक्षेत्र निर्वाण क्षेत्र से, अतिशय से मन मोहे॥
पाँच धाम की करो वंदना, रत्नत्रय की सेवा।
भारत से ही मोक्ष मिलेगा, विद्या सुख का मेवा॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 4

कर्म-काल से तीर्थक्षेत्र की, यात्रा रही अधूरी।
अतः यहीं से करें वंदना, श्रद्धा भक्ति जरूरी॥
शुद्धातम की करलें यात्रा, इतना पुण्य कमाए।
इसी भावना से 'सुव्रत' ने, तीर्थों के गुण गाए॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 4

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल, क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
तीर्थचक्र को करके नमोऽस्तु, सबका मंगल होवे॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान प्रारम्भ

श्री तीर्थचक्र समुच्चय पूजन

स्थापना (शंभु)

अरिहंत सिद्ध आचार्य महा, गुरु उपाध्याय मुनि साधु नगन।
जिन धर्म जिनागम चैत्यालय, प्रभु बिम्ब चैत्य नवदेव परम॥
इनके आश्रित जो क्षेत्र रहे, वे सिद्ध तीर्थ अतिशय वाले।
ले द्रव्यभाव से वन्दन कर, श्री तीर्थचक्र के गुण गा ले॥

(दोहा)

सिद्ध तीर्थ निर्वाण जो, अतिशय या कल्याण।
सबको हृदय विराज के, हो नमोऽस्तु गुणगान॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

यह जन्म मरण की यात्रा तो, भव-भव की यात्रा बढ़ा रही।
पर तीर्थों की यात्रा न हुई, बस दुख की यात्रा करा रही॥
हम सिद्धक्षेत्र को गमन करें, सो प्रासुक नीर समर्पित है।
श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

संसार ताप की ज्वाला ने, हर पथ पर अंगारे डाले।
तब सुख से यात्रा क्या होगी, जब पैर जले आये छाले॥
अब क्षेत्र छाँव शीतल पा लें, सो चंदन गंध समर्पित है।
श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम चाहें बड़े बनें इतने, कि सबसे ऊँचे जग में हों।
पर बड़े वही बन पाते हैं, जो भले बनें प्रभु पद में हों॥
हम त्याग सकें पद लोलुपता, सो अक्षत पुंज समर्पित है।
श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जग कामभोग से आकुल हो, जिन क्षेत्रों पर भी पाप करे।
फिर पाप कहाँ से छूटेगा, फिर कैसे यह अभिशाप टले॥
हों ब्रह्म-विहारी क्षेत्रों पर, सो प्रासुक पुष्प समर्पित है।

श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हम क्षेत्रों पर भी जाकर के, भोजन कर मौज उड़ाते हैं।
कर उन्हें अशुद्ध प्रभाव रहित, अपना आनंद मनाते हैं॥
अब क्षेत्र विशुद्ध शुद्ध कर लें, सो ये नैवेद्य समर्पित है।
श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

है अगर अँधेरा तीर्थों पर, तो जिन शासन क्या चमकेगा।
यदि दीप जलेंगे तीर्थों पर, तो परमातम भी झलकेगा॥
अब आत्म क्षेत्र रोशन कर लें, सो उज्ज्वल दीप समर्पित है।
श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

यदि धूल उड़ेगी तीर्थों पर, तो कर्म कटेंगे क्या हमसे।
ज्यों धूप सुगंधी महकेगी, तो भक्त जुड़ेंगे भगवन से॥
हम जिनशासन यह महका लें, सो प्रासुक धूप समर्पित है।
श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

खुद रहे झोपड़ी में लेकिन, जिनतीरथ बड़े विशाल रचे।
जो वृद्ध धर्मतरु लगा गये, फल उनके हमको खूब रुचे॥
जिनतीरथ क्षेत्र सँभाल सकें, सो फल का गुच्छ समर्पित है।
श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

ये मंदिर तीर्थ न होते तो, जिनशासन कभी न चल पाता।
पहचान न पाते धर्म बिम्ब, खुद का भी पता न मिल पाता॥
हम आत्म तीर्थ उद्धार करें, सो सादर अर्घ्य समर्पित है।
श्री तीर्थचक्र के गुण गाकर, क्षेत्रों को नमोऽस्तु अर्पित है॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रथम अर्घ्यावली
निर्वाण-सिद्धक्षेत्र

(दोहा)

अष्टापद से कर चुके, वृषभ-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभजिनेन्द्र-आदि निर्वाण प्राप्त अष्टापद निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

चम्पापुर से कर चुके, वासुपूज्य कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र-आदि निर्वाण प्राप्त चम्पापुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

गिरनारगिरि से कर चुके, नेमि आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्र-आदि निर्वाण प्राप्त गिरनारि निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

पावापुर से कर चुके, वीर-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र-आदि निर्वाण प्राप्त पावापुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

सम्मेदशिखर से कर चुके, बीसों प्रभु कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री विंशतिजिनेन्द्र-आदि निर्वाण प्राप्त सम्मेदशिखर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

राजगृही से कर चुके, विद्युत-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युत-आदि निर्वाण प्राप्त राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

मंदारगिरि से कर चुके, जो स्वामी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

गुणावा से कर चुके, गौतम गुरु कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम-अदि निर्वाण प्राप्त गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

पटना जी से कर चुके, सुदर्शन-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन-आदि निर्वाण प्राप्त पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

कोलुआ पहाड़ से कर चुके, संत श्रमण कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त कोलुआपहाड़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

मांगीतुंगी से कर चुके, राम-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री रामजिनेन्द्र-आदि निर्वाण प्राप्त मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

शत्रुंजय से कर चुके, पाण्डव-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री पाण्डव-आदि निर्वाण प्राप्त शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

तारंगा से कर चुके, जो-जो मुनि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त तारंगा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

पावागढ़ से कर चुके, लव-कुश नृप कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री लव-कुश-आदि निर्वाण प्राप्त पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

सोनागिरि से कर चुके, नंगादि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री नंगानंग-आदि निर्वाण प्राप्त सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

मुक्तागिरि से कर चुके, जो यति मुनि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

सिद्धोदय से कर चुके, रावण सुत कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री रावणसुत-आदि निर्वाण प्राप्त सिद्धोदय-नेमावर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥17॥

पावागिरि से कर चुके, स्वर्णभद्र-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री स्वर्णभद्र-आदि निर्वाण प्राप्त पावागिरि (पवाजी) सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥18॥

नैनागिरि से कर चुके, वरदत्तादि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री वरदत्त-आदि निर्वाण प्राप्त नैनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥19॥

द्रोणागिरि से कर चुके, गुरुदत्तादि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री गुरुदत्त-आदि निर्वाण प्राप्त द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥20॥

आहार जी से कर चुके, जो त्यागी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त आहारजी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥21॥

फलहोड़ी से कर चुके, संन्यासी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त फलहोड़ी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥22॥

सेंधपा से कर चुके, जो तपसी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त सेंधपा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥23॥

चूलगिरि से कर चुके, इंद्रजीतादि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री इंद्रजीत-आदि निर्वाण प्राप्त चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥24॥

कुण्डलपुर से कर चुके, श्रीधर-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीधर-आदि निर्वाण प्राप्त कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥25॥

सिद्धवरकूट से कर चुके, सनत-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री सनतकुमार-आदि निर्वाण प्राप्त सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥26॥

उज्जैनी से कर चुके, अभय-आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अभयघोष-आदि अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त उज्जैनी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥27॥

जयसिंहपुर से कर चुके, सुकुमालादि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त जयसिंहपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥28॥

ऊन क्षेत्र से कर चुके, जो साधु कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त ऊन सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥29॥

गोपाचल से कर चुके, अनगारी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त गोपाचल सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥30॥

मथुरा जी से कर चुके, जम्बू आदि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामी-आदि निर्वाण प्राप्त मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥31॥

शौरीपुर से कर चुके, जो ध्यानी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त शौरीपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥32॥

कुन्दकुन्दाद्रि से कर चुके, जो योगी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त कुन्दकुन्दाद्रि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥33॥

गजपंथा से कर चुके, बलभद्रादि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री बलभद्र-आदि निर्वाण प्राप्त गजपंथा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥34॥

कुंथलगिरि से कर चुके, कुलदेशभूषण कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री कुलभूषण-देशभूषण-आदि निर्वाण प्राप्त कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥35॥

कचनेर से कर चुके, वैरागी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त कचनेर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥36॥

कलिकुण्ड से कर चुके, जो ज्ञानी कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त कलिकुण्ड सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥37॥

वैजन्ती से कर चुके, जो संयत कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त वैजन्ती सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥38॥

कोटिशिला से कर चुके, जो नृप मुनि कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनेकमुनि निर्वाण प्राप्त कोटिशिला (उदयगिरि-खण्डगिरि) सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥39॥

नवीन पावा से कर चुके, वीर प्रभु कल्याण।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री वीर प्रभु निर्वाण प्राप्त नवीन पावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥40॥

पूर्णार्घ्य

पृथक-पृथक वा साथ में, भजे सिद्ध भगवान।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री सकल निर्वाण-सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

===

द्वितीय अर्घ्यावली

जन्मकल्याणक क्षेत्र

(हाकलिका)

जन्म स्थली प्रभुओं की, नगर अयोध्या की वस्ती।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभ-अजित-अभिनंदन-सुमति-अनंतनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली अयोध्या कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

जन्म धरा शंभव प्रभु की, शुभ संस्कारी श्रावस्ती।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शंभवनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली श्रावस्ती कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

पदम् प्रभु का जन्म स्थान, कौशाम्बी भक्तों की शान।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र जन्मस्थली कौशाम्बी कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

सुपार्श्व प्रभु की जन्म स्थली, काशी नगरी भली-भली।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली भदैनी-काशी कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

चंद्रप्रभु का जन्म स्थान, चन्द्रपुरी हम सबके प्राण।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र जन्मस्थली चन्द्रपुरी (बनारस) कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

पुष्पदंत की जन्म धरा, काकंदी दे पुण्य खरा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र जन्मस्थली काकंदी कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

शीतलनाथ जन्म जगती, नगर विदिशा की धरती।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली विदिशा (भद्दलपुर) कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

श्रेयांस प्रभु की जन्म धरा, सारनाथ में सार भरा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली सिंहपुरी-सारनाथ कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

वासुपूज्य का जन्म स्थान, चम्पापुर चैतन्य मुकाम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र जन्मस्थली चम्पापुर कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

विमलनाथ का जन्म स्थान, कपिला नगर बढ़ाये मान।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली कपिला (काम्पिल्य) कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

धर्मनाथ का जन्म स्थान, रत्नपुरी दे धार्मिक ज्ञान।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली रत्नपुरी कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

शांति-कुन्थु-अरनाथ जिनम्, हस्तिनागपुर धरे जनम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली हस्तिनागपुर कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

मल्लिनाथ का जन्म नगर, मिथिला है नेपाल डगर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली मिथिलापुर कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

मुनिसुव्रत का जन्म नगर, चम्पापुर का कुशाग्रपुर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्र जन्मस्थली कुशाग्रपुर-चम्पापुर कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

नेमिनाथ का जन्म स्थान, शौरीपुर का पावन धाम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली शौरीपुर कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

पार्श्वनाथ का जन्म स्थान, नगर बनारस तीर्थ स्थान।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र जन्मस्थली भेलूपुर बनारस कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

महावीर का जन्म स्थान, कुण्डलपुर का कर सम्मान।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र जन्मस्थली कुण्डलपुर कल्याणकक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पृथक-पृथक वा साथ में, भजे जन्मस्थान।
करके नमोऽस्तु हम भजें, क्षेत्र जन्मकल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री सकल जन्मकल्याणकक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

तृतीय अर्घ्यावली

(अतिशय क्षेत्र)

मध्यप्रदेश के अतिशयक्षेत्र (हाकलिका)

कुण्डलपुर के बड़ेबाबा, पास विराजे खड़ेबाबा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ बड़ेबाबा-आदि जिनेन्द्रविराजित कुण्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

नगर गढ़ाकोटा के पास, पटेरिया के पारसनाथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पटेरिया अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

सुधासागर की जन्म धरा, शांतिनाथ ईशुरवारा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित ईशुरवारा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

मामा-भांजे हैं विख्यात, बीना जी के शांतिनाथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बीना-बारह अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

सागर काकागंज वसे, आदिनाथ करुणा बरसे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित काकागंज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

आपचन्द सागर के पास, जैन गुफा में पारसनाथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित आपचन्द अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

पजनारी बण्डा के पास, शांति आदि प्रभु दें संन्यास।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पजनारी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

क्षेत्र बंधा के अजित प्रभु, विश्व विजेता जगत विभु।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बंधाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

क्षेत्र पपौरा आदीश्वर, टीकमगढ़ का पम्पापुर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पपौराजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

दरगुँवा तीर्थ श्रमणोदय, शांतिनाथ सब प्रभु की जय।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित दरगुँवा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

आदीश्वर कोनीजी के, मध्य वसे पर्वत नदी के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कोनीजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

रहली पटनागंज रहा, वीर पार्श्व का धाम रहा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पटनागंज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

क्षेत्र पिडरुआ साँचा है, पार्श्व दर्श कर नाचा है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पिडरुआ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

प्राणपुरा के आदीश्वर, सबको सुख दे भर-भर कर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित प्राणपुरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

बीनागंज तीर्थ पावन, आदिनाथ का मन-भावन।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बीनागंज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

तीर्थ करैयाहाट रहा, सुव्रतप्रभु का ठाठ रहा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत-आदि जिनेन्द्रविराजित करैयाहाट अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

सम्यक् क्षेत्र विजौरी जी, चंद्रप्रभु की तिजोरी जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित विजौरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥17॥

ग्यारसपुर के पारसजी, दे दो हमें बना-रस जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित ग्यारसपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥18॥

क्षेत्र जबलपुर हनुमान ताल, आदिनाथ को टेको भाल।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित हनुमानताल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥19॥

क्षेत्र जबलपुर मढ़िया जी, पार्श्वनाथ प्रभु बढ़िया जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मढ़ियाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥20॥

बहोरीबंद की धरा भली, शांतिनाथ प्रभु बाहुबली।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बहोरीबंद अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥21॥

तीरथ क्षेत्र बरेला है, पार्श्व द्वार अलबेला है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बरेला अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥22॥

तीर्थ तिगौड़ा मनहारी, आदिनाथ अतिशयकारी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित तिगौड़ा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥23॥

तीर्थ नौहटा आबादी, आदीश्वर गिरि के आदि।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नौहटा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥24॥

शांति प्रभु के चरण भजो, चलो पनागर तीर्थ चलो।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पनागर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥25॥

सिरोंज की नसिया प्यारी, आदिनाथ अतिशयकारी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सिरोंज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥26॥

भौंरासा अतिशयकारी, पार्श्वनाथ महिमाधारी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रविराजित भौंरासा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥27॥

श्रेयांसगिरि जिन तीरथ है, आदिनाथ की कीरत है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रविराजित श्रेयांसगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥28॥

कटनी निकट बिलहरी है, पार्श्वनाथ की नगरी है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बिलहरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥29॥

अजितनाथ त्यौरी वाले, समवसरण कटनी वाले।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित त्यौरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥30॥

अतिशय क्षेत्र अजयगढ़ जी, शांतिनाथ त्रय मंदिर जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अजयगढ़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥31॥

बजरंगगढ़ के शांतिनाथ, सब मंदिर के सब जिननाथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बजरंगगढ़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥32॥

तीर्थ तेजगढ़ चन्द्रोदय, चंद्रप्रभु की बोलो जय।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित तेजगढ़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥33॥

थूबोन जी के आदिनाथ, खड्गासन के प्रभु विख्यात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित थूबोनजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥34॥

खंदारगिरि में खड्गासन, आदिनाथ प्रभु का शासन।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित खंदारगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥35॥

चंदेरी की चौबीसी, हाथ जोड़ शिर नाओ जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चौबीसी-आदि जिनेन्द्रविराजित चंदेरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥36॥

तीर्थ हाटकापुरा भजो, चंद्र-वीर चौबीस जजो।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित हाटकापुरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥37॥

गोलाकोट क्षेत्र गूडर, आदिनाथ प्रभु पर्वत पर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित गोलाकोट अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥38॥

पचराई के शांतिनाथ, याद करें हम हर दिन-रात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पचराई अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥39॥

शांतिनाथ शिवपुरी बड़े, सेसई के नौगजा खड़े।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सेसई अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥40॥

शिवपुरी के छत्री वाले, पार्श्व-शांति जग रखवाले ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व-शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित छत्रीमंदिर-शिवपुरी अतिशय-क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥40॥

पोहरी वाले आदिजिनम्, निकट वसे शिवपुरी जिलम्।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पोहरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥40॥

चंद्रप्रभु कोलारस के, पंचमेरू खड्गासन के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित कोलारस अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥41॥

सिंहोनिया के परम-परम, शांति-कुन्थु-अरनाथ जिनम्।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुन्थु-अरनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सिंहोनियाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥42॥

टिकटौली है पावन ग्राम, शांतिनाथ प्रभु का है धाम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित टिकटौली अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥43॥

कुलैथ है इक प्याारा गाँव, पार्श्वनाथ की मिलती छाँव।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कुलैथ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥44॥

बरई क्षेत्र है महा-महा, अजितनाथ सा कौन कहाँ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बरई अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥45॥

क्षेत्र बरासो न्यारा है, महावीर का द्वारा है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित बरासो अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥46॥

शांतिनाथ पनिहार वसे, तीरथ करने चलो सखे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पनिहार अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥47॥

नरवर के सुव्रत नेमि, उरवाहा गिरि के धर्मी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिसुव्रतनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित उरवाहागिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥48॥

भियादांत के आदीश्वर, नदी किनारे पर्वत पर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित भियादांत अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥49॥

झिरनों वाले मंदिर के, जिनवर जो भोपाल वसे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित झिरनो-भोपाल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥50॥

शांति-कुन्थु-अरनाथ जिनम, भजो समसगढ़ करो धरम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित समसगढ़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥51॥

भजो भोजपुर तीरथ को, शांतिनाथ भागीरथ को।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित भोजपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥52॥

पार्श्वनाथ मक्सीजी के, जिनसे सुख पाना सीखें।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मक्सीजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥53॥

पुष्पगिरि के पारसनाथ, संकटमोचन सबके साथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पुष्पगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥54॥

गोम्मटगिरि के नाथ रहे, आदीश्वर गोम्मटेश खड़े।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-आदि जिनेन्द्रविराजित गोम्मटगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥55॥

महावीर जी छोटा सा, तीर्थ कागदीपुरा वसा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित कागदीपुरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥56॥

मानतुङ्ग-गिरि आदीश्वर, मानतुङ्ग रच भक्तामर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मानतुंङ्गगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥57॥

बनेड़िया के अजित प्रभु, तीर्थ बनाते सभी विभु।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बनेड़ियाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥58॥

शांतिनाथ खजुराहो के, सब प्रभु भजो खुशी हो के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित खजुराहो अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥59॥

निकट बरेली के बाड़ी, आदिनाथ जी कल्याणी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बाड़ी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥60॥

है गंदर्भपुरी न्यारी, पार्श्वनाथ अतिशय कारी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित गंदर्भपुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥61॥

मल्लिप्रभु तालनपुर के, सुख झलकाते शिवपुर के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित तालनपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥62॥

णमोकार जिनधाम रहा, बही-पार्श्व के नाम रहा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बही-चौपाटी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥63॥

तीर्थ कैथुली अपना है, पार्श्वनाथ को जपना है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कैथुली अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥65॥

जामनेर के आदिनाथ, मंगलमय जग में विख्यात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित जामनेर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥66॥

पावई तीरथ कल्याणी, नमिनाथ पूजें प्राणी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पावई अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥67॥

लखनादौन निराला है, आदिनाथ की माला है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित लखनादौन अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥68॥

आदिनाथ प्यावल जी के, निकट वसे प्रभु झाँसी के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित प्यावलजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥69॥

श्रेयांसगिरि जिन तीरथ है, आदिनाथ जिन कीरत है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित श्रेयांसगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥70॥

पूज्य क्षेत्र आहूजी है, प्रतिमा पार्श्वप्रभु की है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित आहूजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥71॥

मल्हारगढ़ के पारसनाथ, जिन भक्तों के रहते साथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मल्हारगढ़-निसईजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं...।72॥

क्षेत्र नौहटा के आदि, हरते हैं आधि-व्याधि।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नोहटा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं...।73॥

ग्यारसपुर जिन तीर्थ रहे, पार्श्वनाथ परमेश रहे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित गयारसपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥74॥

हरदा नगरी शांतिनाथ, भक्तों की सुनते हैं बात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित हरदा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥75॥

सुव्रत प्रभु का खातेगाँव, भक्तों को दे सुख की छाँव।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित खातेगाँव अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥76॥
नेमावर के आदिनाथ, ऐतिहासिक हैं विख्यात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नेमावर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥77॥

उत्तरप्रदेश के अतिशयक्षेत्र

अहिच्क्षेत्र के पारसनाथ, भक्तों को दें अपना साथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अहिच्क्षेत्र अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥
पूज्य देवगढ़ प्यारा है, शांतिनाथ का द्वारा है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित देवगढ़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥
सेरोंन जी के शांतिनाथ, करें शांति की नित बरसात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सेरोंन अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥
क्षेत्रपाल का अभिनन्दन, अभिनन्दन प्रभु को वंदन।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन-आदि जिनेन्द्रविराजित क्षेत्रपालजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥
पार्श्वनाथ ललितपुर के, भजो अटा मंदिर चल के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अटामंदिर ललितपुरअतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥
बाँसी के हम विश्वासी, पार्श्वनाथ के पदवासी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बाँसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥
नगर जखौरा खोजो रे, पार्श्वनाथ को पूजो रे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित जखौरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥
झाँसी के करगुँवा चलें, पार्श्व दर्श से कष्ट टलें।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित करगुँवाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

इच्छापूरक टोड़ी जी, पार्श्व बनाते जोड़ी जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित टोड़ीजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

ऋषभांचल के आदीश्वर, ध्यान योग से दें शिवपुर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित ऋषभांचल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

त्रिलोकतीर्थ के आदि जिनं, बड़ागाँव के पार्श्व जिनं।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित त्रिलोकतीर्थ-बड़ागाँव अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

तप स्थली आदीश्वर की, प्रयागराज की है धरती।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित प्रयागराज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

शांति-कुन्थु-अरनाथ जिनम्, चलो चलें हम बानपुरम्।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुन्थु-अरनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बानपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

भजो मदनपुर मंदिर जी, शांतिनाथ की शांति गिरि।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मदनपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

मड़ावरा को चलिए जी, आदिनाथ को भजिये जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मड़ावरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

आदिनाथ के चलो गिरार, पैदल-पैदल करो विहार।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित गिरार अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

कारीटोरन के भगवन्, शांति-आदि को है वंदन।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कारीटोरन अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥17॥

अरहनाथ को नमन करो, चलो नवागढ़ तीर्थ चलो।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नवागढ़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥18॥

पदम् प्रभु का तप व ज्ञान, प्रभासगिरि का तीर्थ स्थान।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित प्रभासगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥19॥

तीर्थ अलीगढ़ जाना है, आदिनाथ को ध्याना है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अलीगढ़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥20॥

हुसैनपुर के चंदा जी, देते हैं आनंदा जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित हुसैनपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥21॥

बहसूमा जी मेरठ के, चंद्रप्रभु सबसे हट के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित बहसूमा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥22॥

चंद्रप्रभु चंद्रांचल के, भजो महलका सब चलके।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित महलकाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥23॥

बरनावा के चंद्र जिनेश, वसे बागपत धार्मिक देश।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित बरनावा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥24॥

चन्द्रवाड़ के चंदा जी, काटें भव के फंदा जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित चन्द्रवाड़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥25॥

हस्तिनागपुर जम्बूद्वीप, भक्त हृदय के रहे समीप।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुन्थु-अरनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥26॥

श्री दिगम्बर तीर्थ कहाऊँ, पुष्पदंत स्वामी को ध्याऊँ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत-आदि जिनेन्द्रविराजित कहाऊँ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥27॥

नेमिनाथ राजमल के, भक्त नमन हैं पल-पल के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित राजमल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥28॥

त्रिलोकपुर के नेमिनाथ, सारी दुनियाँ में विख्यात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित त्रिलोकपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥29॥

त्रिमूर्ति मंदिर एत्मादपुर, आदिनाथ का भक्ति सुर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित एत्मादपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥30॥

तीर्थ बहलना चलना है, पार्श्वनाथ से मिलना है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बहलनाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥31॥

वृषभनगर जी मरसलगंज, वृषभनाथ का श्रद्धा छंद।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मरसलगंज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥32॥

राजस्थान के अतिशयक्षेत्र

तीर्थ मौजमाबाद रहा, आदिनाथ का राज रहा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मौजमाबाद अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

चमत्कार के आदि पदम, है सवाई माधोपुरम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सवाई माधोपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

चंद्रप्रभु तिजारा के, भक्त मुक्त हों गुण गा के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित तिजाराजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

तीर्थ उदयपुर देवारी, पार्श्वनाथ अतिशयकारी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित देवारी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

मेंडवास है टोंक समीप, चंद्रप्रभु दें आतम दीप।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित मेंडवास अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

चलो चाँदखेड़ी चलिए, आदिनाथ प्रभु को भजिये।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित चाँदखेड़ी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

पार्श्वनाथ बागोल वसे, अंदेश्वर के निकट वसे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बागोल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

महावीरजी महावीरा, जिन भक्तों के हैं हीरा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित महावीरजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

ऋषभनाथ केशरिया जी, जिनायतन की मढ़ियाजी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित केशरियाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

केशवराय तीर्थ पाटन, सुव्रतनाथ हरे दुख गम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित केशवरायपाटन अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

खानिया चूलगिरि जी के, पार्श्वनाथ भगवन जी के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित खानियाजी-चूलगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

संघीजी का सांगानेर, आदिनाथ प्रभु करें न देर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सांगानेर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

खुनादरी के आदिनाथ, वसे खीरवाड़ा के पास।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित खुनादरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

चन्द्रगिरि बेनाड़ वसे, चंद्रप्रभु करुणा बरसे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित बेनाड़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

पदमपुरा के पद्मप्रभु, बाड़ा वाले जगत विभु।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित पदमपुरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

चंबलेश्वर के पारसनाथ, भक्त कष्ट हरते दिन-रात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित चंबलेश्वर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

विजौलिया के पारसनाथ, संकट हर्त्ता देते साथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित विजौलिया अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥17॥

नागफणी प्रभु पारसनाथ, चिन्तामणि जग में विख्यात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नागफणी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥18॥

जहाजपुर के सुव्रतनाथ, जहाज मंदिर को नत माथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत-आदि जिनेन्द्रविराजित जहाजपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥19॥

तीर्थ साखना सुन्दर है, शांतिनाथ जिन मंदिर है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित साखना अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥20॥

शालेदा जिन तीरथ है, नेमिनाथ की मूरत है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित शालेदा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥21॥

पार्श्वनाथ अंदेश्वर के, सुख झलकायें शिवपुर के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अंदेश्वर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥22॥

पारसनाथ अणिन्दा के, हमको लगते चंदा से।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अणिंदा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥23॥

मालपुरा के आदीश्वर, चतुर्थ काल के प्रभु जिनवर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मालपुरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥24॥

आदिनाथ जी सरवर के, निकट नसीराबाद वसे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सरवर-नसीराबाद अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥25॥

प्रतापगढ़ बम्मोत्तर जी, शांतिनाथ का पुत्तर जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बम्मोत्तरजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥26॥

झाँजी दोसा भक्त चले, आदिनाथ रमपुरा भले।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित दोसा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥27॥

नौगामा की नसिया जी, आदिनाथ मन वसिया जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नौगामा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥28॥

खंडार जी के आदिनाथ, सवाईमाधोपुर के पास।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित खंडारजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥29॥

भाग्योदय जी रेवासा, आदिनाथ के हम दासा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित रेवासा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥30॥

चंपानरी चमत्कारी, पार्श्वनाथ अतिशयकारी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित चंपानरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥31॥

शांतिनाथ आँवा वाले, शांति प्रदाता रखवाले।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित आँवा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥32॥

अर्थूना के चंद्रजिनेश, चिदानन्द देते परमेश।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित अर्थूना अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥33॥

श्री मेहंदवास जाना, चन्द्रप्रभु के पद ध्याना।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित मेहंदवास अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥34॥

तीर्थ वघेरा की जय-जय, शांतिनाथ के हैं अतिशय।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित वघेरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥35॥

क्षेत्र लूँणवा मनहर है, चंद्रप्रभु का मंदिर है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित लूँणवा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥36॥

बिहार के अतिशयक्षेत्र

महावीर का द्वारा है, बाहुबली का आरा है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-बाहुबली-आदि जिनेन्द्रविराजित आरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

नंद्यावर्त महल अपना, कुण्डलपुर वीरा जपना।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित कुण्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

वासोकुंड जी वैशाली, महावीर की हरियाली।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित वैशाली अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

झारखण्ड के अतिशयक्षेत्र

श्री कोल्हुआ पहाड़ रहा, शीतलनाथ पुकार रहा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कोल्हुआपहाड़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

पश्चिम बंगाल के अतिशयक्षेत्र

तीर्थ बेलगछिया जाना, पार्श्वप्रभु के गुणगाना।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बेलगछिया अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

धर्मात्मा बच्चा बोला, आदीश्वर जी कठगोला।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कठगोला अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

जियागंज के शंभव जी, कार्य करें हर संभव जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शंभवनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित जियागंज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

है चिन्सुरा पार्श्व का धाम, शीघ्र बनाये सबके काम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित चिन्सुरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

पूज्य पाकबीरा बंगाल, पद्मप्रभु की है गुणमाल।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित पाकबीरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

असम के अतिशयक्षेत्र

असम राज्य में सूर्यापहाड़, आदि पद्म सुपार्श्व के द्वार।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदि-पद्म-सुपार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सूर्यापहाड़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

हरियाणा के अतिशयक्षेत्र

पुण्योदय तीरथ हाँसी, भक्तों की हर ले फांसी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पुण्योदय-हाँसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

कासनगाँव मनोहर है, महावीर जिन मंदिर है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित कासनगाँव अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

आदिनाथ का रानीला, रत्नत्रय का पानी ला।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित रानीला अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

तीर्थ रोहतक हीरा है, महावीर अतिवीरा है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित रोहतक अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

गुजरात के अतिशयक्षेत्र

चन्द्रप्रभ भीलोड़ा के, भजो बिम्ब सब ही ध्याके।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित भीलोड़ा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

वाघेला देरोल रहे, आदि पार्श्व अनमोल रहे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदि-पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित वाघेला-देरोल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

चन्द्रप्रभु का घोघा जी, जगत हितैषी होगा जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित घोघा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

पारसनाथ महोवा जी, देते आतम हलुवा जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित महोवाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

आदिनाथ का उमता है, हम भक्तों को जमता है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित उमता अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

तीर्थ तपोवन तारंगा, विद्या की बहती गंगा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित तारंगाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

तीर्थक्षेत्र अंकलेश्वर है, आदि-पार्श्व परमेश्वर हैं।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदि-पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अंकलेश्वर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

मुनिसुव्रत असूर्या के, समवसरण में जा बैठे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित असूर्या अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

तीरथ क्षेत्र सजोद रहा, शीतलप्रभु को पूज रहा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सजोद अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

तीर्थ बेड़ियाजी न्यारा, पार्श्वनाथ का दर प्यारा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बेड़ियाजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

अमीझरों के पारसनाथ, करे सुखों की ये बरसात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अमीझरो अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

वसे नांदणी आदिनाथ, जो हरते कष्टों की रात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नांदणी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

सेलगाँव के पारसनाथ, जिन्हें झुकाएँ हम सब माथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सेलगाँव अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

आदिनाथ मडगाँव बसे, गोवा देख भक्त हरसे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मडगाँव अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

महाराष्ट्र के अतिशयक्षेत्र

पार्श्वनाथ का आसेगाँव, हम भक्तों पर जिनकी छाँव।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित आसेगाँव अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

पूज्य विघ्नहर पार्श्व भजो, आष्टा या कासार भजो।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित आष्टा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

अंतरिक्ष के पारसनाथ, अंतरिक्ष तक दे दो साथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित अंतरिक्ष अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

भातकुली के आदीश्वर, जिन्हें देख न हटे नजर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित भातकुली अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

दहीगाँव के महावीरा, कष्ट हरें दे भव तीरा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित दहीगाँव अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

धरणगाँव के पारसनाथ, सदा हमें दें आशीर्वाद।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित धरणगाँव अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

पार्श्वनाथ जी एलोरा, जैन गुफा हर लें पीरा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित एलोरा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

पार्श्वनाथ जी संकटहर, जटवाड़ा के वसे नगर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित जटवाड़ा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

पार्श्वनाथ कचनेर वसे, रूठ न जाना प्रभु हमसे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कचनेर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

यवतमाल का डिग्रस है, वृषभनाथ का गजरथ है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित डिग्रस अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

महावीर कारंजा के, वीर बनें हम वन जा के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित कारंजा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

सुपार्श्वनाथ को भज लें हम, चलो चलें कौडण्यपुरम।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कौडण्यपुरम अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

केसापुरी बीड़ चालो, पार्श्व कल्पतरु को ध्यालो।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित केसापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

भक्तातम कुम्भोज चली, पूज रही प्रभु बाहुबली।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-आदि जिनेन्द्रविराजित कुंभोज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

कुंथुगिरि के पारसनाथ, हमको रख लो अपने साथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कुन्थुगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

चंदा बाबा माण्डल के, समवसरण जैसे झलके।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री चद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित माण्डल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

पार्श्वनाथ नाईचाकुर के, सुख झलकाते शिवपुर के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नाईचाकुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥17॥

चलो भजो पंचालेश्वर, पद्मप्रभु जी नन्दीश्वर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित पंचालेश्वर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥18॥

पूज्य नवागढ़ उखलद है, नेमिनाथ का मणिपद है।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नवागढ़ अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥19॥

नेमगिरि जिंतूर चलो, नेमिनाथ जिन गुफा चलो।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित जिंतूर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥20॥

मुनिसुव्रत प्रभु पैठण के, तुम्हें नमन हो क्षण-क्षण के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पैठण अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥21॥

पोदनपुर जी बोरीबली, आदिनाथ प्रभु बाहुबली।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-बाहुबली-आदि जिनेन्द्रविराजित पोदनपुर-बोरीबली अतिशय-क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥22॥

रामटेक के शांति जिनम, पंचबालयति चौबीसम्।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित रामटेक अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥23॥

चलिए काटीसावर गाँव, पार्श्वनाथ की पाने छाँव।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित काटीसावर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥24॥

शिरड़ शहापुर मल्लिनाथ, करें मोह का सत्यानाश।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित शिरड़शहापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥25॥

महावीर का तीरथ तेर, भक्त भले में करे न देर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित तेर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥26॥

जग में श्रेष्ठ विजयगोपाल, हरें आदिप्रभु जग-जंगाल।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित विजयगोपाल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥27॥

मनहर तीर्थ देवलाली, महावीर की दीवाली।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित देवलाली अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥28॥

कर्णाटक के अतिशयक्षेत्र

बीजापुर के पारसनाथ, सहस्त्रफणी हम सबके साथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बीजापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

कर्णाटक की धर्मस्थली, चंद्रप्रभु श्री बाहुबली।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-बाहुबली-आदि जिनेन्द्रविराजित धर्मस्थल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

पार्श्वनाथ हरसूर वसे, गुलवर्गा के दूर वसे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित हरसूर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

पार्श्वनाथ हुंबुज हुमचा, बाहुबली ने तीर्थ रचा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित हुंबुज अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

हडगेली के पारसनाथ, भक्त पूजते हैं दिन-रात।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित हडगेली-हुड़से अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

तीर्थ कारकल बड़ा प्रसिद्ध, बाहुबली प्रभु लगते सिद्ध।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-आदि जिनेन्द्रविराजित कारकल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

पारसनाथ बाबजी के, विघ्न-कष्ट हर्त्ता दीखे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बाबजी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥17॥

चलो! तीर्थ करने बेडूर, बाहुबली को भजें जरूर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-आदि जिनेन्द्रविराजित बेडूर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥18॥

श्रवणबेलगोला चलिए, बाहुबली चंदा भजिये।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-बाहुबली-आदि जिनेन्द्रविराजित श्रवणबेलगोल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥19॥

है कमठाण निराला सा, पार्श्वनाथ का लाला सा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कमठाण अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

तीर्थ कोथली को जाना, शांतिनाथ के गुण गाना।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कोथली अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

मान्यखेट को जायेंगे, मल्लिनाथ को ध्यायेंगे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मान्यखेट अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

तीर्थ मूड़बिद्री चालो, पार्श्वनाथ के गुण गा लो।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मूड़बिद्री अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

तीर्थ शंखवसदी कर लो, नेमिनाथ को उर धर लो।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित शंदवसदी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

भरे तबंदी आनंदी, पार्श्वनाथ की स्तवनिधि।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित स्तवनिधि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

तीर्थ नवग्रह के पारस, हमें पिलाये आतमरस।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नवग्रह अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

शांतिनाथ सदलगा नगर, विद्या गुरु की जन्म डगर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सदलगा अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

तमिलनाडु के अतिशयक्षेत्र

कृष्णगिरि के पारसनाथ, सबके ऊपर उनका हाथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कृष्णगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

श्री मेल चित्तामूर वहाँ, महावीर का धाम जहाँ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित मेल-चित्तामूर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

विजयमंगल रहा साँचा, चंद्रप्रभु का यश नाचा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित विजयमंगल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

नेमिनाथ तिरुमलै वसे, श्री अरिहंत गिरि हरषे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित तिरुमलै अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

पार्श्वनाथ शंखेश्वर के, दर्श कराये शिवपुर के।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित शंखेश्वर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

महावीर जिन काँची के, जहाँ भक्तियाँ नाँची रे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित काँची अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

जिनगिरि के पारस प्यारे, भक्तों के पालनहारे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित जिनगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

पार्श्वनाथ कलिकुण्ड वसे, जिन्हें देख सब जन हरषे।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कलिकुण्ड अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

मुनिगिरि के कुन्थु स्वामी, हमें बनाये शिवगामी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मुनिगिरि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

मन्नागुढ़ी के मल्लिनाथ, हमें बुला लें अपने पास।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मन्नागुढ़ी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

पौन्नुरमलै के महावीरा, हरते हैं सबकी पीड़ा।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित पौन्नुरमलै अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

पालुकुन्नु के पारस जी, हमको दिए बना-रस जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पालुकुन्नु अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

पुंडल तीरथ आदीश्वर, हमको देना मुक्ति घर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पुंडल अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

चाँद चकोरे चंदा जी, चेन्नई के आनंदा जी।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित चेन्नई अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

आंध्रप्रदेश के अतिशयक्षेत्र

विघ्नहरण श्री पारसनाथ, कुलचारम को टेको माथ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित कुलचारम अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

महावीरजी काकातुर, भक्त दर्श को हैं आतुर।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित काकातुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

श्री पेठाथुम्बलम् जहाँ, पार्श्व पार्श्वमणि धाम वहाँ।
अतिशय क्षेत्र देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पेठाथुम्बलम् अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पृथक-पृथक वा साथ में, पूजे अतिशय क्षेत्र।
करके नमोऽस्तु हम भजें, नव देवों के क्षेत्र॥

ॐ ह्रीं श्री सकल अतिशयक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

चतुर्थ अर्घ्यावली

तीर्थक्षेत्र (दोहा)

सागर की मंगलगिरि, जहाँ आदि भरतेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित मंगलगिरि तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

भाग्योदय सागर वसे, चंद्रप्रभु परमेश
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित भाग्योदय-सागर तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

शांतिनाथ सहराई के, देते शांति जिनेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सहराई तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

मुनिसुव्रत सर्वोदयी, खनियाधाना ईश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित खनियाधाना तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

नारेली ज्ञानोदयी शेष, आदिनाथ परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित ज्ञानोदय-नारेली तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

तीर्थ अमरकंटक जहाँ, आदिनाथ परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सर्वोदय-अमरकंटक तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

तिलवारा गौ-धाम में, आदिनाथ परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित दयोदय-जबलपुर तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

कोटा पुण्योदय चालो, आदिनाथ के गुण गालो।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित पुण्योदय-कोटा तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

डोंगरगढ़ की चंद्रगिरि, चंद्रप्रभु परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित चंद्रगिरि-डोंगरगढ़ तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

शांति-कुन्थु-अरनाथ हैं, गोसलपुरी जिनेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुन्थु-अरनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित गोसलपुर तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

बीना के श्रुतधाम में, आदीश्वर परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित श्रुतधाम तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

बडोह पठारी क्षेत्र में, आदीश्वर परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बडोह तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

नेमिगिरि बंडा वसे, नेमिनाथ परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित नेमिगिरि तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

कुण्डलपुर के पास में, बेला तीर्थ जिनेश
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित बेला तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

पार्श्व पथरिया में वसे, विरागोदय जिनेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित विरागोदय तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

मुनिसुव्रत रुठियाई के, मंगलोदय जिनेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित रुठियाई तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

माउन्टाबू आदि जी, दिलवाड़ा के ईश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित दिलवाड़ा तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥17॥

कीर्तिस्तंभ चित्तौड़गढ़, मल्लिनाथ परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित चित्तौड़गढ़ तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥18॥

माँडलगढ़ में वस रहे, चंद्रप्रभु परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित माँडलगढ़ तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥19॥

महरौली के वीर जी, अहिंसास्थली ईश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-आदि जिनेन्द्रविराजित महरौली (दिल्ली) तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥20॥

लालमंदिर-दिल्ली वसे, चंद्रप्रभु परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित लालमंदिर(दिल्ली) अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥21॥

तीर्थ तेजगढ़ के भजो, चंद्रप्रभु परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित तेजगढ़ तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥22॥

स्वर्ण मंदिर ग्वालियर वसे, पार्श्वनाथ परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित स्वर्णमंदिर-ग्वालियर तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥23॥

महाराष्ट्र शिरडी वसे, पार्श्वनाथ परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित शिरडी तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥24॥

हैं केशरियानाथ में, आदिनाथ परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित केशरियानाथ तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥25॥

तुमकुर श्री मंदारगिरि, चंद्रप्रभु परमेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ-आदि जिनेन्द्रविराजित मंदारगिरि-तुमकुर तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥26॥

विद्या गुरु दीक्षा स्थली, नसिया आदि जिनेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, तीरथक्षेत्र विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-आदि जिनेन्द्रविराजित सोनीजी की नसिया-अजमेर तीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥27॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

हम तीन लोकों तीन कालों के, भजें जिन तीर्थ को।
सो ज्ञात व अज्ञात सब ही, पूजते जिन तीर्थ को॥
मन से वचन से काय से ले, अर्घ्य तीर्थों को भजें।
निज आत्म 'विद्या' पा सकें, निज तीर्थ से 'सुव्रत' सजें॥

(दोहा)

सिद्ध अतिशय क्षेत्र सब, हम पूजें धर ध्यान।
पृथक-पृथक व साथ में, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय-तीर्थक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सिद्धों को करके नमन, परमेष्ठी को ध्याएँ।
नवदेवों को नमोऽस्तु कर, तीर्थचक्र गुण गाएँ॥

(ज्ञानोदय)

हमको पंचमकाल मिला तो, ऋद्धि-सिद्धि तो मिल न सकी।
समवसरण की छाँव न पाई, तीर्थंकर निधि मिल न सकी॥
वज्र समान न पौरुष पाया, तन बल भी कमजोर मिला।
ऐसे में अब धर्म करें क्या, जब सब जग प्रतिकूल मिला॥ 1॥
फिर भी कुछ सौभाग्य हमारा, अथवा कृपा तुम्हारी है।
देव शास्त्र गुरुओं की हम पर, धार्मिक छाया भारी है॥
इसीलिए यह भाव हुआ कि, तीर्थ वंदना करना है।
देश भ्रमण तो कर न सकेंगे, किन्तु अर्चना करना है॥ 2॥

अष्ट द्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाऐ, भाव भक्ति से गुण गाए।
सिद्ध तीर्थ अतिशय क्षेत्रों के, गुण गाये भगवन ध्याये॥
श्रीनिर्वाण सिद्धक्षेत्रों को, प्रथम ध्यान कर पूज लिए।
सिद्ध शुद्ध आतम को पूजा, मोक्षमहल पथ खोज लिए॥ 3॥
पूज्य सिद्ध परमेष्ठी जैसा, हमको भी अध्यात्म मिले।
अष्ट कर्म सम्पूर्ण नष्ट कर, लोक शिखर शुद्धात्म मिले॥
कल्याणक क्षेत्रों की महिमा, अर्घ्य चढ़ाकर गाई है।
अपने भी कल्याणक होवें, यही भावना भाई है॥ 4॥
अतिशय क्षेत्रों के गुण गाकर, अपने काम बनाना हैं।
चमत्कार को नमस्कार कर, कुछ-कुछ पुण्य कमाना है॥
तीर्थक्षेत्र की करके यात्रा, निज को तीर्थ बनाएँगे।
जब तक तन में श्वाँस रहेगी, जैन धर्म अपनाएँगे॥ 5॥
क्षेत्रों का आश्रय लेकर के, श्री अरिहंत सिद्ध ध्याए।
श्री आचार्य पूज कर हमने, दीक्षा योग्य भाव भाए॥
उपाध्याय गुरु के वंदन से, सम्यग्ज्ञान निखारा है।
साधु वंदना करके हमने, निज सौभाग्य संवारा है॥ 6॥
पूज्य अहिंसा परमो धर्मः, हमको प्राणों से प्यारा।
अनेकांत स्याद्वादमयी श्रुत, मिला शास्त्र का भंडारा॥
नवदेवों के बिम्ब मनोहर, हम भव-भव में पूजेंगे।
जिन मंदिर चैत्यालय जाकर, हम आतम को खोजेंगे॥ 7॥
तीर्थ वंदना यात्रा हमसे, जब प्रत्यक्ष न हो पाई।
तीर्थचक्र की रचा अर्चना, जिन महिमा हमने गाई॥
भाव यही भव यात्रा हर लें, मोक्षमहल यात्रा कर लें।
'सुव्रत' खुद को तीर्थ बना के, सुख शांति खुद में भर लें॥ 8॥

(दोहा)

नवदेवों के रूप में, पूजे पाँचों धाम।
मिले सिद्ध निज धाम सो, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं निर्वाण-सिद्ध-कल्याणक-अतिशय तीर्थक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तीर्थचक्र स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, तीर्थचक्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

आरती

(लय–छूम छूम छना नना बाजे...)

छूम-छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥

श्री निर्वाण सिद्धक्षेत्रों की, पूज्य तीर्थ अतिशय क्षेत्रों की।
भाव भक्ति से गा के, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥

नवदेवों के क्षेत्र निराले, पुण्य प्रदाता सुख के प्याले।
पाप नशाने वाले, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥

ज्ञानी के ये ज्ञान कहाते, ध्यानी के ये ध्यान कहाते।
श्रद्धालु की श्रद्धा, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥

तीर्थ ना समझो तीर्थ अकेले, हर लेते सब कर्म झमेले।
दें सिद्धों के मेले, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥

तीर्थों की कर तीर्थ वंदना, रत्नत्रय की करें साधना।
'सुव्रत' तीरथ पाएँ, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥